"माटी कहे कुम्हार से,तू क्यूं रौंदे मोय।
इक दिन ऐसा आयेगा, मै रौंदूगी तोय।।

अर्थ----

मिट्टी, कुम्हार से कहती है,कि आज तू मुझे पैरों तले कुचल रहा है एक दिन ऐसा भी आएगा कि मै तुझे पैरों तले रौंदूगी।

हर व्यक्ति अपने-आपको सर्वश्रेष्ठ मानता है । वह यह मानता है कि मैं जो कर रहा हूं वही सही है। इसी मै से अंहकार की उत्पत्ति होती हैं ।

अंहकार मानव स्वभाव का एक हानिकारक गुण है । यह गुण जब स्वभाव में आ जाता है तो वह अपना ही नही औरो का भी नुकसान करता है। ज्यादा अंहकार करने से व्यक्ति में नकारात्मक भावनाएं बढ जाती हैं और वह जाने अनजाने में ही पतन के रास्ते पर आगे बढ जाता है। अहंकार के कारण ही हम अपने आपको जीवन के हर क्षेत्र में उत्कृष्ट मानने लगते हैं । अहंकार के वशीभूत हो हम दूसरों के अनुभवो और ग्यान का उपयोग नही कर पाते , क्योंकि अहम के कारण हम दूसरों की कमजोरी और बुराईयों को ही देख पाते है। अहंकार के कारण हम लोगों को नीचा गिराकर ही आगे बढने के बारे में सोचते रहते हैं । ऊंचे पद या ऊंची जगह पर पहुंच कर इन्सान का दंभ बढ जाता है पर वह यह भूल जाता है कि जब वह असहाय होगा तो उसका साथ देने वाला कोई नहीं होगा। अहंकार मृगतृष्णा के समान है जिसमें न तो खुद की प्यास बुझाती है और न दूसरो की। जीवन की प्रगति में मनुष्य का अंहकार बहुत बडा घातक है। अहंकारी व्यक्ति अपने को पूर्ण समझता है यानि उसे कुछ सीखने की जरूरत नहीं , और जब किसी में यह भाव आ जाए कि उसे कुछ सीखने की जरूरत नहीं तो वह किसी मकसद में कामयाब नही हो सकता हैं । अहंकार के त्याग से उन्नति का मार्ग खुलता है । साथ ही स्वंय को भी बहुत सन्तोष और शांति मिलती हैं।अच्छाई हमारा मूल स्वभाव होना चाहिए।

ये मिट्टी का तन एक दिन मिट्टी होना हैं अभिमान कैसा इतना तो समझ।

CS Praveen Soni
Central Council Member &
Chairman, ICSI-CCGRT